PAHALWAN GURUDEEN PRASIKSHAN MAHAVIDYALAYA

PANARI, LALITPUR (U.P.)

JOURNAL PAPER

DR. VANDANA YAGIK

TITLE - (COMMOUNICATION)

RNI NO. UPBIL/2016/60367

Multi-disciplinary International Journal

Innovation
The Research Consept

Certificate of Paper Publication

RNI UPBIL/2016/68367
ISSN 2456-5474
SJIF-6.122
IIJIF-4.112
Indexed Google

This is to certify that the paper titled ...... संचार ......

Author : वन्दना याज्ञिक
Designation : छात्रा
Dept. : गृह विज्ञान
College : पहलवान गुरुदीन महिला महाविद्यालय, ललितपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

has been published in our Peer Reviewed International Journal
vol. 5 issue 7 month August year 2020
The mentioned paper is measured upto the required.

Dr Rajeev Misra
(Editor/Secretary)

Dr. Asha Tripathi
(Vice-President)

Social Research Foundation
Non Governmental Organisation
128/170, H-Block, Kidwai Nagar, Kanpur - 208011

-5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* August- 2020
Innovation The Research Concept

Contents (Hindi)

Particulars	Subject	Page No.	
		From	To
ारतीय संविधान निर्माण और डॉ. बी. आर. अम्बेडकर Constitution of India and Dr. B. R. Ambedkar बली राम बैरवा, दौसा, राजस्थान, भारत	राजनीतिक शास्त्र	H-01	H-06
र्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों की राजनीति Politics of Environment and Natural Resources ता सिंह, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत	राजनीति विज्ञान	H-07	H-11
ारत में सामाजिक – सांस्कृतिक परिवर्तन का स्वरुप और ों की स्थिति पर उसका प्रभाव Nature of Socio- Cultural Change in India and its Impact on the status of Women ीता गौतम, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत	चित्रकला	H-12	H-15
कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक म्प्राप्ति का शैक्षिक समायोजन के सन्दर्भ में अध्ययन Study of Educational Achievement of Students of Kasturba Gandhi Balika Vidyalaya In The Context of Educational Adjustment नलता तिरुवा एंव पी०के० जोशी, श्रीनगर, गढ़वाल, राखण्ड, भारत	शिक्षाशास्त्र	H-16	H-20
दरश मिश्र के ललित निबंधों की भाषा शैली Language Style of Lalit Essays of Ramdarash Mishra न सिंह फर्त्याल एंव जगदीश चन्द्र जोशी, नैनीताल, राखण्ड, भारत	हिन्दी	H-21	H-24
रिवारिक वातावरण का किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में दान Family Environment Contributes to Adolescent 's mic Achievement कुमारी, झारखण्ड, भारत	शिक्षाशास्त्र	H-25	H-26
ालय इंटर्नशिप की वर्तमान स्थिति Current Status of School Internship कुमार दाँगी एंव रीना जैन, जयपुर, राजस्थान, भारत	शिक्षाशास्त्र	H-27	H-29
रत के मुकाबले चीन का नेपाल में बढ़ता प्रभाव : अध्ययन China's Growing Influence in Nepal Compared to ia: A Study न्द्र कुमार, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत	राजनीति विज्ञान	H-30	H-33
ों ommunication याज्ञिक, ललितपुर, उत्तर प्रदेश, भार	गृह विज्ञान	H-34	H-36
के मुस्लिम सद्भावना स्थल k's Muslim Goodwill Sites मियाँ, टोंक, राजस्थान, भारत	उर्दू	H-37	H-39
दा प्रबन्धन में पर्यावरणीय शिक्षा की भूमिका ole of Environmental Education in Disaster agement सिंह, चरखारी, महोबा, उत्तर प्रदेश, भारत	भूगोल	H-40	H-44

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* August- 2017
Innovation The Research Concept

संचार

Communication

Paper Submission: 15/08/ 2017 Date of Acceptance: 26/08/ 2017 Date of Publication: 27/08/ 2017

वंदना याज्ञिक
व्याख्याता,
गृह विज्ञान विभाग,
पहलवान गुरुदीन महिला महाविद्यालय, ललितपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भोजन वस्त्र तथा आवास के साथ–साथ मनुष्य की एक मौलिक आवश्यकता है अपनी मनो भावनाओं को अभिव्यक्त करना तथा अपने सह जनो के साथ वार्तालाप करना। मनुष्य की यह आद्य प्रवृति है जिसके लिए यह ललायित रहता है मनुष्य की यह भावना सम सामायिक सभ्यता में विद्यवान रहने या बने रहने की एक आवश्यक शर्त बन गई है। संचार या संवाद के बिना आधुनिक जीवन का कोई अस्तित्व नहीं है और संचार ही जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है।

Communication begins with life and ends only when life ceases to exist. In other words, it is co-terminus with life. Along with food, clothing and accommodation, a fundamental need of man is to express his feelings and to have a conversation with his fellow people. This is the primordial tendency of human for which he is eager. This feeling of human has become a necessary condition to or live in an equitable civilization without communication modern life has no existence.

मुख्य शब्द : समसामायिक, संचार, संवाद, भावना, संचारहीन।
Contemporary, Communication, Dialogue, Emotion, Communicationless.

प्रस्तावना

जब शिशु गर्भ में रहता है तो उसकी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ती स्वतः हो जाती है तथा वह पूर्णतः सुरक्षित होता है किन्तु जन्मोपरांत स्थितियाँ बदल जाती है। जन्म लेते ही शिशु का प्रथम क्रन्दन इस तत्व की ओर इंगित करता है कि वह बाहरी दुनिया के इस नये परिवेश से सम्पर्क स्थापित करना चाहता है। इसे अभिव्यक्ति का प्रथम कृत्य कहा जा सकता है। जन्मजात शिशु अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संचार का सहारा लेता है तथा अपनी भावनाओं को दूसरों तक पहुँचाता है। भावनाओं की अभिव्यक्ति तथा विचारो का आदान–प्रदान मनुष्य के जीवन पर्यन्त चलता रहता है और उसकी विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों (आँख, कान, नाक, त्वचा, तथा जीभ) इस कार्य में मनुष्य की सहायता करती है। सच पूछा जाये तो ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से ही मनुष्य अपने जीवन के समस्त अनुभव बटोरता है। इन्हीं अनुभवों को यही दूसरों के साथ बाँटता भी है। अनुभव एवं अनुभूतियों को बटोरने और बाटने की यही क्रिया संचार कहलाती है आदिकाल से मनुष्य विभिन्न भंगिमाएँ बनाकर अनेकानेक भावों, मुद्राओं के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता आया है। कालांतर में जब भाषा, चित्रकला, संगीत, नृत्य, साहित्य की विविध विधाओं और रसों, इत्यादि का विकास हुआ तो मनुष्य को अभिव्यक्ति के अनेक माध्यम मिले और वह अपने अनुभवों को दूसरों के साथ बाँटने में अधिक सक्षम होता गया। The researches show that on an average a person spends about 70% of his active time in communicating verbally- listening speaking, reading and writing.

संचार के रूप

हमारे जीवन में संचार के रूपों या प्रकारों में विद्यवान है संचार सम्पर्क हम अनेक रूपों में स्थापित करते है इनमे भाषा और लिपि के अतिरिक्त हमारी भाव भंगिमाएँ, हमारा मुस्कुराना, मुँह बिचकाना, पलके झपकाना, भौहे ताड़ना, आँखे तरेरना, दाँत भीचना, हाथ मारना, पैर पटकना जैसी क्रियाए भी सम्मिलित है संचार के लिए शब्दो की मध्यस्थता आवश्यक नही है दृश्य, श्रव्य, स्पर्श, और प्राण शक्तियो के माध्यम से संचार सम्पन्न होता है गाड़ी की आवाज, कदमो की आहट, द्वार पर लगी खुन्डी का खट–खटाया जाना अथवा कॉलबेल का बजना,

किसी के आने की सूचना देता है अपनी आँखो के माध्यम से हम अनेक क्षेत्रों में संचार स्थापित कर लेते है किसी को देखकर मुस्कुराना, हाथ जोड़कर नमस्कार करना हमारे मधुर भाव को दर्शाता है। कमरे के अन्दर बैठे–बैठे मिट्टी से उठने वाली सोंधी गन्ध पाकर हम जान जाते है कि बाहर वर्षा प्रारम्भ हुई है। रसोईघर से आने वाली विभिन्न प्रकार की सुगन्धों के द्वारा व्यंजनो का पता चलता है. इसी प्रकार दुध के उफनाने या दाल के जलने का पता भी गन्ध के द्वारा हमे प्राप्त हो जाता है।

1. वैयक्तिक संचार
2. पारस्परिक संचार
3. सामूहिक संचार
4. सामाजिक संचार

संचार का महत्व

संचार प्रणाली के अन्तर्गत संचालक द्वारा व्यवहार किए जाने वाले शब्द और उनके अर्थ सुस्पष्ट होने चाहिए। ग्रहणकर्ता के पास शब्दों का पूर्वानुभव भी होना चाहिए यदि एक ही शब्द के दो या अधिक अर्थ है तो संचारक के प्रेषण और गृहणकर्ता के गृहण करने में अन्तर आ सकता है। भारत जैसे विशाल और बहुभाषी देश में इस तरह की समस्याएँ अधिक देखने को मिलती है।

संचारक

संचार प्रक्रिया का स्रोत या आरम्भकर्ता संचारक होता है। इसे प्रारम्भ बिन्दु भी कहा जा सकता है। प्रसार प्रणाली में इसके कई नाम या रूप हो सकते है। यथा स्रोत, प्रेषक, सूचनावाहक, संचारक, वक्ता इत्यादि संचाकर को संतुलित व्यक्ति का होना चाहिए उसके पास अपने विषय का विस्तृत ज्ञान होना चाहिए। संचारक की जिम्मेदारी या सामाजिक जिम्मेदारियों से परिपूर्ण होता है। उसकी प्रस्तुती मात्र तथ्यो, विचारो सूचनाओं आदि को ही प्रेषित नही करती वरन लोगो को परिवर्तन की ओर अग्रसर होने को प्रेरित करती है।

संदेश

संचार प्रक्रिया के अर्न्तगत संचार का प्रथम कार्य संदेश या उसकी विषय वस्तु का चयन करना होता है यह कार्य प्रायः मानसिक धरातल पर प्रारम्भ होता है। गहन सोच विचार आवाश्यक है संदेश की विषय वस्तु महत्वपूर्ण उपयोगी समसमयिक तथा सर्वानुकूल होने के साथ–साथ रूचिकर भी होनी चाहिए।

संचार माध्यम

मानव संचार का इतिहास अत्यन्त पुराना है किन्तु संचार माध्यमो के इतिहास में 20वीं शताब्दी में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। सदियों तक विभिन्न लोक माध्यम जैसे– लोकगीत, लोकनाटक, लोकनृत्य, कठपुतली के खेल भांड, लावणी, बाउल इत्यादि संचार माध्यम रहें।

प्राप्तकर्ता

संदेश के प्राप्तकर्ता पाठक श्रोता तथा दर्शक सामान्य रूप से हुआ करते है। संदेश हो प्राप्त करने वाले प्रायः संचार माध्यम से सम्बन्ध होते है। उदाहरणार्थ जिनके पास टेलीवीजन है उसके माध्यम से संदेश प्राप्त कर सकते है जो पढ़े–लिखे है उनके लिए अनेकानेक छपित माध्यम उपलब्ध होते है। व्यक्तिगत सम्पर्क या ग्रह संम्पर्क के द्वारा ही प्राप्त कर्ता को चयनित करना प्रसार कर्ता के लिए सहज रहता है इससे संदेश सही व्यक्ति द्वारा ही गृहण किया जाता है।

विशेषताये

स्पष्ट एवं सहज

संचारक द्वारा प्रेषित संदेश समझने में स्पष्ट तथा अनुकरण में सहज होना चाहिए। इससे संचारक के प्रति विश्वसनीयता भी बढ़ती है। जटिल तथा पेचीदा बाते गृहण कर्ता में संदेह जगाती है। तथा वह सम्पूर्ण एकाग्रता के साथ उन्हे ग्रहण नही कर पाता। संदेश के माध्यम से बताई गई प्रणाली पूरी तरह व्याख्यित होनी चाहिए।

लाभ

मानव स्वभाव का एक महत्वपूर्ण पक्ष है कि किसी भी बात की लाभप्रद संम्भावनाओं को देखना मनुष्य हर काम इसी उद्देश्य से करता है एक कृषक भी नई पद्धति को इसी उद्देश्य से गृहणकर्ता है कि उसे उससे अधिक धनोपार्जन होता है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक अनुरूपता

हर व्यक्ति सामाजिक बन्धनो और सांस्कृतिक रीति– रिवाजों विश्वासों के दायरो में कैद रहता है ये सब उसके जीवन में आदत का रूप धारण कर लेते है। संचारक का यह कर्तव्य होता है कि कोई संदेश प्रेषित करे तो व्यक्ति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विश्वासों पर किसी प्रकार का कुठाराघात ना हो। संदेश में इन मान्यताओं के प्रति अनुरूपता झलकनी चाहिए। इनमे यदि परिवर्तन लाना हो तो परोक्ष ढंग अपनाया जाना चाहिए। किसी भी मान्यता को स्पष्ट रूप से गलत या बुरा कहना संचार मन में बाधक हो सकता है।

मितव्ययता

संदेश द्वारा बतायी गई विधियों या कार्य खर्चीले नहीं होने चाहिए। अनुमान्य लागत पर ध्यान जाते ही गृहण कर्ता अपनी रूचि खो बैठते है।

विभाज्यता

प्रसार काल के अर्न्तगत प्रेषित संदेश का उद्देश्य पूरे समुदाय या वर्ग के कल्याण में निहित होता है किन्तु संचारित संदेश का ग्रहणकर्ता एक अकेला किसान भी हो सकता है। ऐसा देखा गया है कि नय प्रयोगो को लोग वृहत रूप में अधिक लागत लगाकर अपमानित से छिचकिचाते है। ऐसी स्थिति में संदेश की विभाज्यता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नवाचार को छोटे पैमाने पर अपनाकर तथा निष्कर्ष या परिणाम से संतुष्ट होना, प्रेषित संदेश का एक विशिष्ट गुण है। जिसके सहारे लोग बड़े पैमाने पर अनुसरण करने को प्रेरित होते है।

जन सम्बोधित एवं बहुहितकारी

संचारक द्वारा प्रेषित संदेश सामान्य जन समुदाय को सम्बोधित होना चाहिए तथा उससे पहुँचने वाले लाभो से विराट जन समुदाय लाभान्वित होना चाहिए। एक छोटे वर्ग को लाभ पहुँचाकर जनकल्याण की परिकल्पना नही की जा सकती है। अतः संदेश में "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" की भावना निहित होनी चाहिए।

ISSN: 2456–5474

RNI No.UPBIL/2016/68367

Vol.-5* Issue-7* August- 2017

Innovation The Research Concept

अध्ययन का उद्देश्य

भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम अपनी बातें दूसरों तक पहुँचाते है। तथा दूसरो की बातें हम तक पहुँचती है। 24 घण्टो में से आधा समय हम बातें करते बिताते है। I good message is that which is valid, unambiguous, comprehensive and of utility to the receivers. -हम अधिकांश समय बातें करते, बातें सुनते, पढ़ते या लिखते हुए व्यतीत करते है। संचार का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत होता है प्रायः उठने के साथ ही व्यक्ति संचार के घेरे में बन्ध जाता है। तथा रात में सोने के समय ही उससे निकल पाता है। प्रातः घर के लोगो से बात–चीत या अखबार पढ़ना, रेडियो सुनना, टेलिविजन देखना सभी संचार के ही रूप है। इनमें कुछ प्रत्यक्ष होते है और कुछ अप्रत्यक्ष होते है। समाचार पत्र में छपी खबरे व्यक्ति के सामाजिक दायित्वों को उजागर करती है और उसको सामाजिक प्राणी होने का एहसास दिलाती है। जिससे वह अपने निकटवर्ती एवं दूरस्थ घटित होने वाली घटनाओं से अपने को जोड़ता है। किन्तु समाचार पत्रो को समाचार और विज्ञापन ऐसे भी होते है जो व्यक्तियो से सम्बन्धित होते है। ये समाचार उसके जीवन के कार्य क्षेत्र से सम्बन्ध होते है। अपने उत्पादनो के विज्ञापन वह समाचार पत्रिकाओं, होर्डिंग, बैनर, फोटोग्राफ, रेडियो विज्ञापन, टेलीविजन विज्ञापनों आदि के माध्यम से उपभोक्ता तक पहुँचता है। संचार के क्षेत्र में अनुसंधान का महत्वपूर्ण स्थान है समय–समय पर जनसंचार प्रणाली तथा उसके प्रभावों का अवलोकन अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। उदाहरणार्थ– इन प्रश्नो के उत्तर अनुसंधान के द्वारा ही किये जाते है।

(क) किसी समाचार पत्र को कितने लोग पढ़ते है ?

(ख) किसी साबुन विशेष का उपयोग कितने परिवारो में होता है ?

(ग) रेडियो या टी0वी0 के किसी कार्यक्रम विशेष के कितने श्रोता या दर्शक है तथा कार्यक्रम विषयक उनकी क्या प्रतिक्रिया है ?

निष्कर्ष

आज का युग प्रतियोगिता का युग है हर व्यक्ति एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा की भावना रखता है और आगे निकलना चाहता है। जीवन की इस दौड में कोई भी तभी आगे जा सकता है। जब वह सूचनाओं और जानकारियों से स्वंय को परिपूर्ण करे एक किसान अपनी फसल में बढ़ोत्तरी तभी ला सकता है जब वह खेती की नूतनतम् जानकारियाँ रखे तथा उनका उपयोग करे। कृषि क्षेत्र में हो रहे नित नये प्रयोग इस व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए प्रगति उन्नति एवं आर्थिक समृद्धि के अनेक–नेक द्वार खुलते जा रहे है यहाँ प्रसार कार्य–कर्ता का भी कर्तव्य हो जाता है। कि वह स्वंय नूतन जानकारियो को प्राप्त कर किसानो तक पहुँचाये। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रो से सम्बन्ध व्यवसायों से जुड़े लोगो को भी नई–नई जानकारियाँ तथा सूचनाये देता रहे। लोगो को नई जानकारियाँ तथा सूचनाएं विविध संचार माध्यम देते है तथा प्रसार कर्ता के लिए विशेष रूप से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम उनके ज्ञान स्तर को बढ़ाने में सहायता पहुँचाते है। जो प्रसार कर्ता अपने कार्य क्षेत्र के लोगों को नवीनतम् सूचनाएँ देने में असमर्थ रहता है। वह एक असफल कार्य कर्ता सिद्ध होता है, अतः उसे स्वंय को संचार की विविध विधाओं से जोड़े रखना पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गीता पुष्प शॉ (2008) प्रसार प्रचार शिक्षा एवं संचार व्यवस्था*
2. *रॉबिन शॉ पुष्प (2008) आग्रवाल पब्लिकेशन्स मेरठ*
3. *पचौरी डॉ गिरीश (2014) शिक्षा का सामाजिक आधार लायन बुक डिपो मेरठ*
4. *रीना खनूना (2008) गृह व्यवस्था, आग्रवाल पब्लिकेशन्स*
5. *डॉ0 नीता आग्रवाल (2007) आग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा*
6. *डा. बीना निगम (2008) जुहारी देवी गर्ल्स डिग्री कॉलेज कानपुर*
7. *श्री मती उषा मिश्रा (1978) साहित्य प्रकाशन आगरा*
8. *अल्का अग्रवाल (1978) साहित्य प्रकाशन आगरा*